सामाजिक विज्ञान का शिक्षण-अधिगम एवं स्थापित संज्ञान (Situated Cognition)

संदीप कुमार*

सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसका आधार समाज है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि इसकी शिक्षण पद्धति भी समाज संदर्भित हो। स्थापित संज्ञान (Situated Cognition) उपागम, एक ऐसा उपागम है जो शिक्षण और अधिगम को एक साथ जोड़कर समाज के सापेक्ष देखता है। इस उपागम की अवधारणा है कि ज्ञान समाज संदर्भित होता है और उन्हीं संदर्भों में उस ज्ञान को समझा जा सकता है। इस उपागम की आधारभूत मान्यताएँ एवं सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के मध्य समानताएँ होने से यह उपागम सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम को महत्वपूर्ण बना देता है। यह शोध पत्र सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम को स्थापित संज्ञान के सापेक्ष समझाने का प्रयास करता है। जिसके लिए कक्षा 9 की सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं का अवलोकन एवं विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर सामाजिक विज्ञान के शिक्षण-अधिगम हेतु कुछ उपयुक्त सुझाव भी दिए गए हैं।

प्रायः सामाजिक विज्ञान को एक ऐसा विषय माना जाता है जिसे विद्यार्थियों द्वारा रटकर याद किया जाता है और शिक्षकों द्वारा भी सामान्यतः व्याख्यान विधि से पढ़ाया जाता है। इसलिए शिक्षण पद्धति का स्वरूप भी सत्तावादी रहा है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि अध्यापकों को स्वयं ज्ञान का निर्माण करने या इस तथ्य को समझाने का मौका ही नहीं मिला कि ज्ञान के अपने संदर्भ होते हैं तथा वह वहीं स्थापित होता है। औसुबेल (2000) के मतानुसार,''अधिगम को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक वह ज्ञान है जिसे विद्यार्थी पहले से जानते हैं।''

यद्यपि 1960 के दशक से ही इस बात पर बल दिया जाता रहा है कि विद्यालय स्तर पर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक व्यावहारिक और प्रभावी बनाने की आवश्यकता है, लेकिन इसका ज़मीनी यथार्थ चिन्तनीय है। शिक्षा आयोग (1964–66) ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। इस बात का समर्थन 1986 की शिक्षा नीति में भी किया गया है।

स्थापित संज्ञान, ज्ञान को मात्र ग्रहण करने का विरोध करता है। इस उपागम की स्पष्ट धारणा है कि ज्ञान को समझने या सृजन करने की प्रक्रिया प्रत्येक दिन की गतिविधियों से शुरू होती है। अतः इसको उन्हीं गतिविधियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* ने इस बात

**असिस्टेंट प्रोफेसर*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय 110007

© NCERT not to be republished

को स्पष्ट किया है कि शिक्षण के लिए ऐसी विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो सृजनात्मक, सौन्दर्यात्मक, आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक समझ को बढ़ाएँ तथा विद्यार्थियों को अतीत व वर्तमान के मध्य संबंध बनाने, भविष्याभिमुखी बनाने और समाज में होने वाले परिवर्तनों तथा उठने वाले ज्वलंत मुद्दों को समझाने में सहायक हो सके।

कुमार (2010) के अनुसार, विद्यार्थी अपने अनुभवों पर आत्मचिंतन करके, अपने ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। यह प्रक्रिया उन्हें अपने ही अधिगम के संदर्भ में विशेषज्ञ बना देती है। अध्यापक एक ऐसे वातावरण का निर्माण करे, जिसमें विद्यार्थियों को प्रश्न करने तथा अपने विचारों की प्रक्रिया पर आत्ममंथन करने का अवसर मिले। ऐसे अवसर व्यक्तिगत भी हो सकते हैं और सामूहिक भी। अध्यापक को ऐसी गतिविधियों को बनाना होता है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने पूर्व ज्ञान पर आत्मचिंतन तथा मूल्यांकन कर सकें।

वायगोत्स्की ने अपने कार्य के तहत अधिगम के संदर्भ में केवल संज्ञान को ही महत्व नहीं दिया, बल्कि वे अधिगम प्रक्रिया में सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में हिस्सेदारी को भी महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उन्होंने व्यक्ति के चिंतन के निर्माण के विकास पर बल दिया। उनके कार्य का मूल केंद्र-बिंदु सदैव व्यक्ति के विकास के सामाजिक-सांस्कृतिक आधारों का अध्ययन करना रहा है। अतः सामाजिक विज्ञान जैसे विषयों के निर्माण की पृष्ठभूमि समाज ही है, अतः इसे सामाजिक संदर्भों में ही समझने की आवश्यकता है। स्क्रेबनर (1997) ने इसी बात का पक्ष लेते हुए कहा है कि बालकों में उच्च स्तरीय चिंतन सामाजिक गतिविधियों में हिस्सा लेकर होता है।

आज 21वीं सदी में सामाजिक विज्ञान का स्वरूप न केवल ज़्यादा समग्र (इन्टीग्रेटिड) हुआ है, बल्कि इसके विषय क्षेत्र का भी विस्तार हुआ है। इसके अंतर्गत आज सामाजिक समस्याओं को राजनीतिक, आर्थिक, समाजशास्त्रीय आदि क्षेत्रों के साथ संबद्ध कर औपचारिक अध्ययन किया जाता है, जिनका स्वरूप बहुत ही संवेदनशील है तथा इनके प्रति व्यावहारिक समझ ही नागरिकों में सही अभिवृत्ति का विकास कर सकती है।

लेकिन शिक्षण के क्षेत्र में आज भी सामाजिक विज्ञान को एक पदार्थिक, अंतिम तथा समाहित माना जाता है (जिसको उस वातावरण से पृथक माना जाता है जहाँ उसका निर्माण हुआ है तथा प्रयोग होता है।) इसी को आधार बनाकर शिक्षण-अधिगम पद्धतियों को तय कर लिया जाता है।

उपरोक्त संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि विद्यार्थी उदासीन रूप से ज्ञान को ग्रहण करने हेतु बाध्य होते हैं तथा वास्तविक जीवन में उसकी प्रयोगात्मकता को नहीं समझ पाते हैं। इस प्रकार, सामाजिक विज्ञान जैसे विषय के शिक्षण में आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक दिन की गतिविधियों में प्रयोग होने वाले ज्ञान तथा कौशलों का विकास किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में ऐसे कौशलों का विकास होना चाहिए जिसके आधार पर वे जागरूक नागरिक तथा समाज के सजग सदस्य बन सकें।

अतः इस शोध कार्य में मुख्य रूप से कक्षागत प्रक्रियाओं को स्थापित संज्ञान उपागम के दृष्टिकोण से अध्ययन करना था। अतः शोध का मूल उद्देश्य सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की अवलोकनात्मक जाँच तथा विश्लेषण स्थापित संज्ञान की रूपरेखा के मुताबिक करना था। इस

© NCERT not to be republished

प्रकार यह शोध अध्ययन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में स्थापित संज्ञान के शैक्षिक आशयों को ध्यान में रखकर सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं के विस्तृत विश्लेषण को प्रस्तुत करता है।

शोध प्रविधि, आँकड़ों का एकत्रण एवं विश्लेषण

इस शोध अध्ययन का स्वरूप वर्णानात्मक एवं विश्लेषणात्मक था तथा प्रस्तुत कार्य में आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए विशेषतः अवलोकन का प्रयोग किया गया था। शोधक ने दिल्ली के एक विद्यालय की कक्षा 9 के सामाजिक विज्ञान की कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान अवलोकन कर आँकड़े संग्रहित किए। आँकड़ों का संलेखन कक्षा के संचालन के साथ-साथ किया गया ताकि अवलोकन की गुणवत्ता को बनाए रखा जा सके। इन्हें बाद में विश्लेषित किया गया। विश्लेषण हेतु स्थापित संज्ञान उपागम के सैद्धान्तिक आधार को तैयार किया गया और प्रयोग किया गया। शोध का मूल उद्देश्य इस बात का विश्लेषण करना था कि सामाजिक विज्ञान की कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान किस प्रकार स्थापित संज्ञान को स्थान दिया जाता है या किस सीमा तक स्थापित संज्ञान को स्थान मिल पाता है।

अवलोकन का स्वरूप असहभागी अवलोकन था जिसके तहत शोधक ने कक्षा में बैठकर अवलोकन किया। अवलोकन हेतु एक ही अध्यापक की लगातार 25 कक्षाओं को चुना गया था।

अवलोकित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु शोधक द्वारा स्थापित संज्ञान की समझ के आधार पर एक रूपरेखा का निर्माण किया गया है, जिनके आधार पर अवलोकित आँकड़ों का विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण एवं परिचर्चा

स्थापित संज्ञान विद्यार्थियों को वास्तविक जगत् की संभावनाओं में सम्मिलित करता है तथा अपने ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को प्रमाणिक बनाने का प्रयास करता है। अतः संबंधित साहित्य की समीक्षा को आधार बनाकर शोधक ने एक रूपरेखा तैयार की, जिसका विवरण इस प्रकार है—

- स्मरण के स्थान पर अनुप्रयोग पर बल।
- कक्षा और गतिविधियों के उद्देश्यों और लक्ष्यों का आधार, अध्यापक-विद्यार्थी समझौता।
- अध्यापक की भूमिका एक सुगमकर्ता के रूप में।
- परासंज्ञानात्मक, आत्मविश्लेषण, प्रतिलोचन और जागरूकता आधारित गतिविधियों, अवसरों और वातावरण की उपलब्धता।
- जीवंत, मौलिक और वास्तविक जीवन की जटिलताओं से संबंधित-अधिगम परिस्थितियाँ, वातावरण, कौशल, कार्य और विषय-वस्तु।
- ज्ञान निर्माण प्रक्रिया में विद्यार्थियों के पूर्व-निर्मित ज्ञान, विश्वास और अभिवृत्तियों की भूमिका।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विश्लेषणात्मक रूप से विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक परिवेश का स्थान।

उपरोक्त बिंदुओं के आधार पर विश्लेषण के उपरांत प्राप्त निष्कर्षों को दो भागों में विभक्त किया गया है। पहला, विश्लेषण से प्राप्त परिणाम या निष्कर्ष तथा दूसरा, सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सुझाव। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि शोधक द्वारा यहाँ किसी भी प्रकार का सामान्यीकरण नहीं किया गया। अतः शोधक द्वारा अवलोकित कक्षाओं के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण कर परिणाम प्रस्तुत किए गए।

© NCERT not to be republished

कक्षागत प्रक्रियाओं के अवलोकन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम

संदर्भहीन शिक्षण—अवलोकित कक्षाओं के अवलोकन से स्पष्ट हुआ कि सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में अध्यापक ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संदर्भ प्रधान बनाने का कोई प्रयास नहीं किया। विद्यार्थियों तथा विषय-वस्तु के अपने संदर्भों को शिक्षण के दौरान पूर्णतः अनदेखा किया गया। ज्ञान के निर्माण में बच्चों का संदर्भ महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसके चलते विद्यार्थी अधिगमजन्य ज्ञान को सफलतापूर्वक अपने परिवेश के संदर्भ में समझ पाते हैं। अवलोकित कक्षाओं में स्पष्ट रूप से इन तत्वों का अभाव पाया गया।

रटंत पद्धति पर बल

अवलोकित कक्षाओं के विश्लेषण से यह बात भी स्पष्ट रूप से सामने आई कि अध्यापक के द्वारा उपलब्ध कराए गए अवसरों का स्वरूप मात्र रटंत अधिगम पर आधारित था। जिसके तहत पाठ्यपुस्तक तथा अध्यापक के द्वारा बताए गए ज्ञान को स्मरण करना सम्मिलित रहा। विद्यार्थियों से केवल इस बात की अपेक्षा की गई कि वे पाठ्यपुस्तकों में लिखित जानकारी को याद कर प्रस्तुत कर सकें। विद्यार्थियों के संदर्भों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बनाया गया। संप्रत्ययों के अर्थों को समझकर तथा उसके प्रयोगात्मक पहलू को समझकर सीखना नहीं पाया गया।

परासंज्ञानात्मक योग्यताओं के विकास की अनदेखी

परासंज्ञानात्मक योग्यताओं का अर्थ है कि विद्यार्थी अपनी समझ तथा चिंतन प्रक्रिया पर आधारित प्रश्न पूछ सकें। इस प्रकार के अवलोकन कक्षागत प्रक्रियाओं में नहीं देखे गए जहाँ विद्यार्थी ने स्वयं के चिंतन तथा समझ के संदर्भ में प्रश्न उठाए हों। यदि विद्यार्थी अपने अधिगम के विकास को परखते चलें और यदि विकास यथोचित एवं सही न हो तो अधिगम परिस्थितियों को बदलें। इस प्रकार चिंतन में समझ को परिलक्षित करना उनमें परासंज्ञानात्मक योग्यताओं को स्पष्ट करता है। परासंज्ञानात्मक योग्यताओं का उदाहरण विद्यार्थियों द्वारा चिंतन के उस स्तर को दर्शाना है जो अपनी चिंतन की प्रक्रिया पर सक्रिय नियंत्रण रखता है। परंतु अवलोकित कक्षाओं में इस प्रकार के अवसरों की अनुपलब्धता पाई गई।

विद्यार्थियों के अनुभवों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अनदेखी

विद्यार्थियों के अनुभवों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में स्थान देना अनिवार्य है। जब हम सामाजिक विज्ञान शिक्षण की बात करते हैं तो अनुभव का महत्व और भी बढ़ जाता है। विद्यार्थियों के अनुभवों तथा अधिगमित सम्प्रत्ययों/विषय-वस्तु के मध्य संबंध स्थापित हो तो विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में सहजता से सहभागिता करते हैं तथा अधिगम को बोझ न मानकर रुचिपूर्ण तरीके से उसमें हिस्सेदार बनते हैं। इस प्रकार की हिस्सेदारी उन्हें अपने ज्ञान का स्वयं निर्माता बनाती है। इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें इस बात का अहसास भी कराती है कि ज्ञान के निर्माण का उत्तरदायित्व भी उन्हीं पर है। लेकिन अवलोकित सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में इस प्रकार के अवसर विद्यार्थियों को नहीं मिल पाए, जिसके चलते कक्षागत शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पृथकता के साथ संचालित हुई, जिसमें विद्यार्थियों के अनुभवों को कोई स्थान नहीं मिला।

© NCERT not to be republished

विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करने वाले अवसरों का अभाव

विश्लेषणात्मक चिंतन तथा समझ में विवरणात्मक समझ के स्थान पर किसी संप्रत्यय के पीछे कार्य करने वाले साक्ष्यों तथा पद्धतियों को समझना सम्मिलित है। विश्लेषण की प्रक्रिया में सामान्यतः उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर तर्कपूर्ण निष्कर्ष तक पहुँचा जाता है, लेकिन अवलोकित कक्षाओं में विद्यार्थियों को इस प्रकार के असवर उपलब्ध नहीं कराए गए। विषय-वस्तु को भी इस प्रकार उपलब्ध नहीं कराया गया कि विद्यार्थी विश्लेषणात्मक चिंतन कर सकें। विद्यार्थियों को इस बात का मूल्यांकन करने का अवसर नहीं मिला कि उपलब्ध सामग्री संप्रत्ययात्मक समझ के विकास की प्रक्रिया में कितनी यथोचित है। विद्यार्थियों द्वारा बताए गए उदाहरणों को भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बनाया गया। विश्लेषणात्मक समझ के विकास के लिए किसी प्रकार की सामूहिक चर्चाओं को भी स्थान नहीं दिया गया। इसी प्रकार विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिंतन को विकसित करने के अवसर भी नहीं मिल सके। आलोचनात्मक चिंतन विभेदीकरण, मूल्यांकन तथा विश्लेषण की प्रक्रियाओं को समाहित रखता है। साथ ही, यह संश्लेषण तथा चिंतन के पुनर्निर्माण को विश्लेषण के आधार पर स्थान देता है। अवलोकित कक्षाओं में इस प्रकार के अवसरों की कमी ने शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को कमज़ोर बनाया है तथा विद्यार्थियों की चिंतन प्रक्रिया को सशक्त बनाने में भी कोई विशेष योगदान नहीं दिया है।

अध्यापक तथा विद्यार्थियों के मध्य समझौते का अभाव

अध्यापक तथा विद्यार्थियों के मध्य कक्षागत प्रक्रियाओं में संप्रत्ययात्मक स्पष्टता के लिए आपसी बातचीत के बहुत कम अवसर दिए गए। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अध्यापक तथा विषय-वस्तु केंद्रित रही, जिसमें विद्यार्थियों का स्थान बहुत कम था। कक्षाओं के अवलोकन में पाया गया कि अध्यापक एक ऐसा व्यक्ति था जो सब कुछ जानता है, जबकि विद्यार्थी कुछ नहीं जानते थे तथा वे अध्यापक द्वारा ज्ञान बाँटने की प्रतीक्षा करते पाये गए। कक्षागत प्रक्रियाओं में विद्यार्थी की सहभागिता तथा भूमिका नगण्य पाई गई। अन्यथा सामाजिक विज्ञान जैसे विषय की कक्षागत प्रक्रियाओं में आपसी बातचीत तथा चर्चा संप्रत्यात्मक समझ को एक व्यापक आधार प्रदान करती है। विद्यार्थी चर्चाओं के दौरान अपने विचारों को सापेक्षिक दृष्टि से समझकर अपनी समझ का निर्माण करते हैं। लेकिन अवलोकित कक्षाएँ इस प्रकार के वातावरण से पूर्णतः अछूती रहीं। आपसी समझौता विद्यार्थियों में आलोचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक चिंतन की योग्यताओं को अर्जित करने में सहायक होती हैं और इनका विकास इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि सामाजिक विज्ञान शिक्षण कोई परिणाम नहीं, बल्कि एक प्रक्रिया के रूप में प्रभावी रूप से कार्यरत रहता है।

सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसरों का अभाव

कक्षा में सामूहिक रूप से अधिगम के अवसर देना अति आवश्यक है। सामूहिक अधिगम में छोटे-छोटे समूह होते हैं और प्रत्येक समूह में विभिन्न योग्यताओं वाले विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जाता है। इन समूहों

© NCERT not to be republished

के साथ अनेक अधिगम गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी एक-दूसरे से सीखते हैं, जिसका एक आधार यह सोच होती है कि आपकी सफलता मुझे और मेरी सफलता आपको सहायता पहुँचाती है। अवलोकित कक्षाओं में इस प्रकार के वातावरण के निर्माण की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया गया। अधिगम के अवसर विद्यार्थियों को पृथकता के आधार पर दिए गए। आपसी चर्चा भी कक्षागत प्रक्रियाओं में अवलोकित नहीं हुई। सामाजिक विज्ञान का विषय-क्षेत्र इतना व्यापक है कि जितने विचारों को हम जान पाएँ, संप्रत्ययात्मक समझ उतनी ही बढ़ती जाती है। विद्यार्थी एक ही संप्रत्यय के संदर्भ में अनेक विचारों को जानकर औचित्यपूर्ण तरीके से उनके प्रति एक सशक्त तथा सार्थक समझ का निर्माण कर सकते हैं। लेकिन अवलोकित सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में इस प्रकार के अवसरों को स्थान नहीं दिया गया।

उच्च स्तरीय चिंतनात्मक कौशलों का विकास

सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना भी है। साथ ही, सामाजिक मुद्दों के प्रति सचेतता तथा जागरूक करना भी इसका उद्देश्य है, ताकि विद्यार्थी सामाजिक रूप से संवेदनशील मुद्दों को निष्पक्षता के साथ मूल्यांकित कर सकें। इन कौशलों में वर्गीकरण, तुलना, समीक्षा, विश्लेषण, संश्लेषण आदि सम्मिलित हैं। कक्षागत प्रक्रियाओं के तहत यह स्पष्ट रूप से अवलोकित किया गया कि विद्यार्थियों को इस प्रकार के कौशलों को विकसित करने के अवसर उपलब्ध नहीं हो पाए। अध्यापक के विचारों को ही कक्षा में अंतिम पाया गया। विद्यार्थियों ने स्वयं किसी प्रकार के वर्गीकरण, तुलना या विश्लेषण के कार्यों में भाग नहीं लिया तथा परंपरागत ज्ञान को पूर्व निर्धारित पद्धति के माध्यम से समझने का प्रयास किया। जैसा कि फ़सलों, खनिजों आदि के वर्गीकरण संबंधी विषयों में भी विद्यार्थियों को उच्च स्तरीय चिंतनात्मक कौशलों को विकसित करने का मौका नहीं मिला, बल्कि उनका वर्गीकरण भी अध्यापक द्वारा करके विद्यार्थियों के समक्ष मात्र प्रस्तुत कर दिया गया। अतः उच्च स्तरीय चिंतनात्मक कौशल, जो सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है, उस पर ध्यान नहीं दिया गया।

संप्रत्ययों को वास्तविक जीवन की जटिलताओं के संदर्भ में न देखना

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संप्रत्ययों को वास्तविक जीवन की जटिलताओं के संदर्भ में न देखा जाना सामाजिक विज्ञान की कक्षा के सफल संचालन में बड़ी बाधा साबित हुआ। अध्यापक द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को वास्तविक जीवन के साथ जोड़ने का कोई प्रयास नहीं किया गया। अधिगमित संप्रत्ययों को मात्र कक्षा की चहारदीवारी में ही बड़े अमूर्त रूप से पढ़ाया गया। इन संप्रत्ययों को विद्यार्थियों के जीवन तथा जीवन की जटिलताओं के संदर्भ में चर्चा करने का प्रयास नहीं किया गया। सामाजिक विज्ञान जैसे विषय के अंतर्गत आने वाले संप्रत्ययों को समझने हेतु विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक जटिलताओं के साथ समझने के अवसर उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण रहता है। ऐसा करना विद्यार्थियों को अपने ज्ञान का न केवल स्वयं निर्माता बनाता है, बल्कि वे अपने निर्मित ज्ञान की अनुप्रयोगात्मकता को भी समझ सकते हैं। लेकिन विश्लेषण ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार का वातावरण कक्षागत प्रक्रियाओं में अवलोकित नहीं हुआ।

© NCERT not to be republished

सामाजिक विज्ञान के संप्रत्ययों के प्रति संवेदनशीलता के विकास के कम अवसर

सामाजिक विज्ञान शिक्षण का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील बने। इन संवेदनशील मुद्दों के प्रति एक गहन समझ विकसित करे। इसी के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को भी विकसित करे तभी सामाजिक विज्ञान शिक्षण सफल होता है। अवलोकित कक्षाओं में इस प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति होती प्रतीत नहीं हुई। जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, आदि महत्वपूर्ण विषय रहे, जिन्हें कक्षा में पढ़ाया गया, लेकिन विद्यार्थियों को इनके संरक्षण के प्रति भावात्मक चिंतन करने के कोई अवसर नहीं दिए गए। ऐसा इस कारण भी नहीं हो पाया, क्योंकि अध्यापक ने विद्यार्थियों के अनुभवों को तथा उनके परिवेश को शिक्षण-अधिगम का आधार नहीं बनाया।

बहु दृष्टिकोणों की अनदेखी

सामाजिक विज्ञान की प्रकृति इस प्रकार की है कि हम इसमें एक सीमा तक ही सामान्यीकरण कर सकते हैं। क्योंकि स्थान, समय तथा काल के प्रभाववश ही सामाजिक विज्ञान का विकास होता है। इसी कारण, इसके संप्रत्ययों के प्रति एक सबल समझ को विकसित करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों को महत्व देना अनिवार्य है। एक ही संप्रत्यय पर विभिन्न दृष्टिकोण एक-दूसरे को व्यापकता के साथ संप्रत्यय की समझ को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। लेकिन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस प्रकार के अवसरों को कक्षा में स्थान नहीं दिया गया। बल्कि अध्यापक के दृष्टिकोण को ही अंतिम माना गया, जिस कारण अध्यापक केंद्रित कक्षा में विद्यार्थियों के विचारों को कोई स्थान नहीं दिया गया तथा सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के विपरीत बहु-दृष्टिकोणों के महत्व को नकारा गया।

आत्म-विमर्श के अवसरों का अभाव

विश्लेषण स्पष्ट करता है कि कक्षा का वातावरण या विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए गए अवसर इस प्रकार के नहीं थे कि विद्यार्थियों को आत्म-विमर्श का मौका मिले। आत्म-विमर्शात्मक चिंतन में विश्लेषण तथा समालोचन भी सम्मिलित रहते हैं। सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता के विकास में असमर्थ वातावरण ने विद्यार्थियों को आत्म-विमर्श का मौका भी नहीं दिया। क्योंकि कक्षाओं का स्वरूप हमेशा परंपरागत तरीकों पर चलता था। विद्यार्थियों के स्वयं के चिंतन तथा इस चिंतन पर क्यों से प्रश्न करने के तो अवसर ही नहीं दिए गए, जिसके कारण विद्यार्थियों को तर्कपूर्ण चिंतन के विकास का अवसर नहीं मिला। तर्कहीनता के चलते प्रतिलोचन को भी स्थान नहीं मिल पाया।

अतः ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को विद्यार्थियों के संदर्भ तथा परिवेश से पृथक करके समझना यथोचित नहीं है। वायगोत्स्की कहते हैं कि हमारा सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश हमें अर्थ निर्माण तथा अधिगम प्रक्रिया को संदर्भ के रूप में देखने में मदद करता है। उपर्युक्त परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगण प्रक्रिया को सापेक्षित तथा संदर्भगत बनाने की नितान्त आवश्यकता है। स्थापित संज्ञान निस्संदेह सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी और सशक्त बना सकता है। स्थापित संज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान की समान प्रकृति को एक आधार के रूप में देखा जा सकता है। अतः दोनों की प्रकृति को समझकर यथावत कक्षागत प्रक्रियाओं में प्रयोग करने की आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished

सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सुझाव

अवलोकित कक्षाओं के विश्लेषण के परिणामों द्वारा यह तथ्य उभरकर सामने आया कि सामाजिक विज्ञान की कक्षाओं में स्थापित संज्ञानवादी उपागम को अनदेखा किया गया है। परिणामों के तहत शोधक ने उन समस्याओं को पहचाना जो सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अरुचिकर बना देती हैं। अतः शोध पत्र के इस भाग में सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के सफल संचालन हेतु कुछ सुझाव दिए गए हैं—

- अध्यापन एक जटिल प्रक्रिया है, इसके लिए अध्यापक को विद्यार्थियों की सृजन की योग्यताओं तथा अवसरों के प्रति समझ को समझना होगा। क्योंकि प्रभावी शिक्षण में विद्यार्थी का ज्ञान, विषय अनुशासन का ज्ञान तथा शिक्षण पद्धति का ज्ञान, सभी सम्मिलित हैं।
- सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों को समझना होगा कि सामाजिक विज्ञान का सीधा सरोकार समाज से है। वहीं से यह विषय अपनी विषय-वस्तु ग्रहण करता है, अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को उन्हीं सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक संदर्भों में पढ़ाने की आवश्यकता है।
- अध्यापक को चाहिए कि वह ज्ञान की स्थापित प्रकृति को समझे तथा यथानुसार शिक्षण-अधिगम के अवसर विद्यार्थियों को उपलब्ध कराएँ।
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों के अनुभवों, पूर्वज्ञान, पूर्व-निर्मित विश्वासों तथा अभिवृत्तियों को ध्यान में रखकर कक्षागत प्रक्रियाओं को तय किया जाए।
- कक्षा शिक्षण के लिए प्रयोग गतिविधियों के उद्देश्य तथा विषय-वस्तु का दायरा भी विद्यार्थियों की सहमति से तय किया जाना चाहिए, ताकि सामाजिक विज्ञान शिक्षण को प्रभावी बनाया जा सके।
- अध्यापक को यह समझना होगा कि पुस्तक या स्वयं अध्यापक ज्ञान का अंतिम स्रोत नहीं है। उसे इस बात को भी स्वीकारना होगा कि विद्यार्थी ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाते हैं। आवश्यक है कि अध्यापक विद्यार्थियों को इस बात के अवसर दें कि वे ज्ञान का निर्माण स्वयं करें।
- अध्यापक की भूमिका एक सहायक की होनी चाहिए, जो विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शामिल करें तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों में भी उन्हें निर्देशित करें अर्थात् कठिनाई के समय एक मार्गदर्शक के रूप में सहायता तथा सुझाव प्रदान करें।
- विद्यार्थियों को ज्ञान निर्माण के अवसर समझौते के आधार पर भी मिलने चाहिए। यह समझौता विद्यार्थियों व अध्यापक के बीच तथा विद्यार्थियों के बीच भी हो सकता है। इस प्रक्रिया में एक-दूसरे के विचारों को समझना तथा अपनी समझ को बनाने हेतु चर्चा करना सम्मिलित है।
- सामाजिक विज्ञान की प्रकृति के अनुरूप आवश्यकता इस बात की है कि अधिगम के अवसरों का स्वरूप सामूहिक हो अर्थात् समूह के माध्यम से अधिगम के अवसर उपलब्ध हों। एक समूह में विभिन्न योग्यताओं वाले विद्यार्थियों को रखना लाभदायक होगा, क्योंकि एक-दूसरे की सहायता से वे उन संप्रत्ययों को भी समझ सकते हैं, जिनको वे अकेले नहीं समझ सकते थे।

© NCERT not to be republished

- अध्यापक को चाहिए कि वह कक्षागत प्रक्रियाओं के स्वरूप को तथा विषय-वस्तु को इस प्रकार प्रयोग करें कि विद्यार्थियों को प्रतिलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने का अवसर मिले।
- कक्षागत प्रक्रियाओं को इस प्रकार तैयार किया जाए कि विद्यार्थी कक्षागत निर्मित ज्ञान के अनुप्रयोगात्मक पहलुओं को समझें।
- अध्यापक को यह भी ध्यान रखना होगा कि विषय-वस्तु तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को इतना सरल भी न बनाया जाए कि विद्यार्थी जटिल संप्रत्ययों को समझने में बाधा या कठिनाई महसूस करें। विद्यार्थियों की योग्यताओं के आधार पर अधिगम प्रक्रिया को जटिल बनाने की आवश्यकता है।
- सामाजिक विज्ञान के संप्रत्ययों को समझने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी अपने उच्च स्तरीय चिंतनात्मक कौशलों को विकसित करें। अतः अध्यापकों का दायित्व है कि वे ऐसा वातावरण निर्मित करें कि विद्यार्थी इन कौशलों को विकसित कर सकें।
- सामाजिक विज्ञान के विद्यार्थियों का सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील होना अनिवार्य है। अतः अध्यापक को चाहिए कि वह अधिगम प्रक्रियाओं का स्वरूप यथानुसार रखे।
- जहाँ तक संभव हो कक्षागत प्रक्रियाओं में सूचनाओं के प्राथमिक स्रोतों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- सामाजिक विज्ञान के अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों के बहु-दृष्टिकोणों का सम्मान करे तथा इस बात को समझे कि इन विविध विचारों की भिन्नता का कारण विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि, उनका ज्ञान, अनुभव तथा समझ हो सकता है।
- अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को इस बात के अवसर उपलब्ध कराएँ कि वे अपनी चिंतन प्रक्रिया तथा समझ पर भी प्रश्न उठा सकें, तथा वे निष्पक्षतापूर्ण संप्रत्ययों को समझ सकें।
- अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह कक्षा की शुरुआत में विद्यार्थियों को संलग्न (एंगेज) करने का प्रयास करें ताकि विद्यार्थियों का कक्षा में ध्यान बना रहे। इस हेतु रुचिकर पद्धतियों का प्रयोग (जिनका स्वरूप सामूहिक हो) कारगर तथा प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

अतः सामाजिक विज्ञान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्थापित संज्ञान की रूपरेखा के अनुसार समझना तथा उसके अनुसार विद्यार्थियों को अधिगम के अवसर उपलब्ध कराना प्रभावी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि स्थापित संज्ञान प्रतिदिन गतिविधियों से शुरू होता है तथा अधिगम के तरीकों को जन्म देता है।

संदर्भ

औसुबेल, डी. 2000. *द एक्वाज़िशन एंड रेटेंशन ऑफ़ नोलिज.* स्प्रिंगर पब्लिकेशन, यू.के.

कुमार, संदीप. 2010. शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ और निर्मितिवाद. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* अंक 3, पृ. 59–65. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *2006. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शिक्षा निदेशालय. 1966. *राष्ट्रीय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट — 1964 – 66.* शिक्षा निदेशालय, भारत सरकार, दिल्ली.

© NCERT not to be republished